Shaan e Sahaba o Aahl e Bait (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 462
Weekly Booklet : 462

अमीरे अहले सुन्नत के मुहर्रम शरीफ़ 1444 और 1447 हिजरी के दो बयानात

शाने सह़ाबा व अहले बैत

सफ़ह़ात : 16

शाने सिद्दीक़े अकबर ब ज़बाने मौला अ़ली 02
रसूलुल्लाह के हम शक्ल चन्द अफ़राद 12
शहर बानो के नाम की वज्हे तस्मिया 15
ह़ज़रते बीबी सकीना 16

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖنَ ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

शाने सहाबा व अहले बैत(1)

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला "शाने सहाबा व अहले बैत" पढ़ या सुन ले उसे सहाबा व अहले बैत का ख़ूब ख़ूब फ़ैज़ान नसीब फ़रमा और उस को मां बाप और ख़ानदान समेत बे हिसाब बख़्श दे।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ **:** हर शख़्स की दुआ पर्दे में होती है यहां तक कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप की आल पर दुरूदे पाक पढ़े। (معجم اوسط، 1/211، حدیث:721)

उन के मौला की उन पर करोरों दुरूद उन के अस्हाबो इ़तरत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 308)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ की शान

हज़रते (सय्यिदुना) जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रिवायत है कि हम ख़िदमते अक़्दस हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में हाज़िर थे, इरशाद फ़रमाया : इस

1.... मुहर्रम शरीफ़ 1444 और 1447 हिजरी को आशिक़ाने सहाबा व अहले बैत के दरमियान अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने "शाने सहाबा व अहले बैत عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان" के मौज़ूअ़ पर सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया। اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ ! शोबा हफ़्तावार रिसाला इन दो बयानात में अमीरे अहले सुन्नत के रिसाले "इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ की करामात" से कुछ मवाद का इज़ाफ़ा कर के उन्हें रिसाले की सूरत में पेश कर रहा है। ख़ुद भी पढ़िए और अपने मर्हूमीन के ईसाले सवाब के लिए तक़्सीम कीजिए। (शोबा : हफ़्तावार रिसाला)

वक़्त तुम पर वोह शख़्स चमके (यानी ज़ाहिर हो) गा कि अल्लाह पाक ने मेरे बाद उस से बेहतर व बुज़ुर्गतर किसी को न बनाया और उस की शफ़ाअत, शफ़ाअते अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) के मानिन्द होगी। हम ह़ाज़िर ही थे कि (ह़ज़रते सय्यिदुना) अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ नज़र आए, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ियाम फ़रमाया (यानी खड़े हो गए) और (ह़ज़रते सय्यिदुना) सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को प्यार किया और गले लगाया।

(तारीख़े बग़दाद, 3/340, ह़दीस : 1457 – आ़शिक़े अकबर, स. 21)

जन्नत के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ की शान में 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ अबू बक्र ! मेरी उम्मत में सब से पहले जन्नत में दाख़िल होने वाले शख़्स तुम ही होगे।

(ابوداؤد،4/280،حدیث:4652)

﴿2﴾ (ऐ अबू बक्र !) तुम आग से अल्लाह पाक के आज़ाद किए हुए हो।

(ترمذی،5/382، حدیث:3699)

﴿3﴾ अबू बक्र की मह़ब्बत और इन का शुक्र मेरी तमाम उम्मत पर वाजिब है।

(تاریخ الخلفاء الاربعۃ وغیرہم،ص89،حدیث:84)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

शाने सिद्दीक़े अकबर ब ज़बाने मौला अ़ली

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते मौलाए काएनात, मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमत में एक बार किसी मौक़ा पर अ़र्ज़ किया गया कि (ह़ज़रते) अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) का ह़ाल बयान कीजिए। तो ह़ज़रते मौला अ़ली ने फ़रमाया : येह वोह साह़िब हैं कि अल्लाह पाक ने जिब्रीले अमीन और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक पर इन का नाम "सिद्दीक़" रखा, वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा थे, ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें हमारे दीन

की इमामत के लिए पसन्द फ़रमाया तो हम ने अपनी दुनिया में भी इन्हीं को पसन्द किया। अ़र्ज़ की गई : (ह़ज़रते) उ़मर बिन ख़त्ताब (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) के बारे में बताइए। मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : येह वोह साह़िब हैं जिन का नाम अल्लाह करीम ने "फ़ारूक़" रखा, इन्हों ने ह़क़ को बात़िल से जुदा किया, मैं ने नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को (बारगाहे इलाही में) अ़र्ज़ करते सुना कि इलाही ! उ़मर बिन ख़त्ताब के सबब इस्लाम को इ़ज़्ज़त दे। फिर अ़र्ज़ की गई : (ह़ज़रते) उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) के बारे में भी कुछ बता दीजिए। तो ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) ने फ़रमाया : येह वोह साह़िब हैं कि मलाए आला (यानी फ़रिश्तों) में "ज़ुन्नूरैन" (यानी दो नूर वाले) पुकारे जाते हैं, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दो शहज़ादियों के येह शौहर हुए और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के लिए जन्नत में एक मकान की ज़मानत फ़रमाई है।

(الشریعۃ للآجری، 3/428 قول:1885 , फ़तावा रज़विय्या, 30/630)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की इन चार यारों पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

रह़मतें हों हर सह़ाबी पर मुदाम और ख़ुसूसन चार यारों को सलाम
आलो अस्ह़ाबो नबी के जिस क़दर चाहने वाले हैं सारों को सलाम

(वसाइले बख़्शिश, स. 606)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा

ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म का मुख़्तसर तआ़रुफ़

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की कुन्यत "अबू ह़फ़्स" और लक़ब "फ़ारूक़े आज़म" है।

(مستدرک، 4/239، حدیث:5042۔ حلیۃ الاولیاء، 1/75، قول:93)

आप के इस्लाम क़बूल करने से मुसलमानों को बेहद ख़ुशी हुई और उन को बहुत बड़ा सहारा मिल गया यहां तक कि हुज़ूर रहमते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों के साथ मिल कर हरमे मोहतरम में अ़लल एलान नमाज़ अदा फ़रमाई। हज़रते फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه के ईमान लाने से ग़ैर मुस्लिमों की कमर टूट गई। उन का बहुत रोब था।

(تہذیب الاسماء واللغات، 2/324 ملخصًا, फ़ैज़ाने फ़ारूके आज़म, 1/712 मुलख़्ख़सन)

महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं जन्नत में गया, वहां मैं ने एक महल देखा मैं ने पूछा : येह महल किस का है ? फ़रिश्ते ने अ़र्ज़ की : हज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْه का। मैं ने चाहा कि अन्दर दाख़िल हो कर उसे देखूं लेकिन (ऐ उ़मर !) तुम्हारी ग़ैरत याद आ गई। येह सुन कर हज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْه अ़र्ज़ करने लगे : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान, क्या मैं आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ग़ैरत कर सकता हूं ?

(بخاری، 2/525، حدیث:3679 ملتقطاً)

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه की शान में 3 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ مَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ عَلٰى رَجُلٍ خَيْرٍ مِّنْ عُمَرَ यानी उ़मर (رَضِیَ اللهُ عَنْه) से बेहतर किसी आदमी पर सूरज तुलूअ़ नहीं हुवा।

(ترمذی، 5/384، حدیث:3704)

﴿2﴾ اِنَّ اللّٰهَ جَعَلَ الْحَقَّ عَلٰى لِسَانِ عُمَرَ وَقَلْبِهٖ यानी अल्लाह पाक ने उ़मर (رَضِیَ اللهُ عَنْه) की ज़बान और दिल पर हक़ जारी फ़रमाया।

(ترمذی، 5/383، حدیث:3702)

﴿3﴾ आस्मान के तमाम फ़रिश्ते उ़मर (رَضِیَ اللهُ عَنْه) की इ़ज़्ज़त करते हैं और ज़मीन का हर शैतान उन के ख़ौफ़ से लरज़ता है।

(تاریخ دمشق، 44/85)

पसे सिद्दीक़े अकबर मुस्तफ़ा के सब सह़ाबा में है बेशक सब से ऊंचा मरतबा फ़ारूक़े आज़म का
गली से उन की शैत़ां दुम दबा कर भाग जाता है है ऐसा रोब ऐसा दबदबा फ़ारूक़े आज़म का
सह़ाबा और अहले बैत की दिल में मह़ब्बत है ब फ़ैज़ाने रज़ा में हूं गदा फ़ारूक़े आज़म का

(वसाइले बख़्शिश, स. 526)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का मुख़्तसर तआ़रुफ़

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा हैं। आप की कुन्यत "अबू अ़म्र" और लक़ब "जामेउ़ल क़ुरआन" है। आप का एक मशहूर लक़ब "ज़ुन्नूरैन" (यानी दो नूर वाले) भी है, क्यूंकि अल्लाह पाक के नूर, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी दो शहज़ादियां यके बाद दीगरे (यानी एक के बाद एक) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के निकाह़ में दी थीं। यानी एक शहज़ादी जब वफ़ात पा गईं तो प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरी शहज़ादी उन के निकाह़ में दी। (معجم کبیر، جز:22/436، حدیث:1061) मेरे आक़ा आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीस को अपने शेर में इस त़रह़ नज़्म करते हैं :

नूर की सरकार से पाया दो शाला नूर का हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 246)

शाने उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ में 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ सख़ावत एक जन्नती दरख़्त है और उ़स्मान उस की शाख़ों में से एक शाख़ हैं।

(کنز العمال، جز:11، 6/273، حدیث:32849)

﴿2﴾ हर नबी का कोई साथी होता है मेरे साथी (यानी जन्नत में) उ़स्मान हैं।

(ترمذی،5/390،حدیث:3718)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ यानी सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमाने आ़लीशान का म़तलब यूं बयान करते हैं : मेरे ख़ुसूसी साथी ह़ज़रते उ़स्मान होंगे वरना मुत्लक़न साथी और बहुत से ख़ुश नसीब ह़ज़रात भी होंगे (यानी बहुत सारे मेरे साथी होंगे लेकिन ख़ुसूसी साथी ह़ज़रते उ़स्मान होंगे)। चुनान्चे बाज़ रिवायात में है कि मेरे ख़ास दोस्त अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) होंगे। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/393, मिरक़ात, 10/432, तह़तल ह़दीस : 6070)

जो दिल को ज़िया दे जो मुक़द्दर को जिला दे वोह जल्वए दीदार है उ़स्माने ग़नी का

(ज़ौक़े नात, स. 81)

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जन्नती हैं

एक मरतबा एक शख़्स बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से मुसाफ़ह़ा फ़रमाया (यानी हाथ मुबारक मिलाया) और जब तक उस शख़्स ने अपना हाथ न खेंचा आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का हाथ न छोड़ा उस शख़्स ने पूछा : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ह़ज़रते उ़स्मान कैसे हैं ? इरशाद फ़रमाया : वोह जन्नतियों में से एक शख़्स हैं। (معجم کبیر،12/309،حدیث:13495)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का तआ़रुफ़

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते मौला अ़ली, शेरे ख़ुदा, رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की कुन्यत "अबुल ह़सन" और "अबू तुराब" है। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की अम्मीजान ने अपने वालिद के नाम पर आप का नाम "ह़ैदर" रखा, वालिद ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का नाम

"अ़ली" रखा। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को "असदुल्लाह" यानी अल्लाह के शेर के लक़ब से नवाज़ा, इस के इ़लावा "मुर्तज़ा" (यानी चुना हुवा selected), "कर्रार" (यानी पलट पलट कर ह़म्ले करने वाला), "शेरे ख़ुदा" और "मौला मुश्किल कुशा" आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के मश्हूर अल्क़ाबात हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8/412 मुलख़्ख़सन)

उस ने लक़बे ख़ाक शहंशाह से पाया जो ह़ैदरे कर्रार कि मौला है हमारा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 32)

शाने मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : " اَنَا مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ وَعَلِيٌّ بَابُهَا यानी मैं इ़ल्म का शहर हूं और अ़ली उस का दरवाज़ा हैं।" (مستدرک، 4/96، حدیث، 4692)

अल्लाह के प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़लिय्युल मुर्तज़ा को देखना इ़बादत है।" (مستدرک، 4/118، حدیث: 4737)

अल्लाह के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मैं इ़ल्म का शहर हूं, अबू बक्र इस की बुनियाद, उ़मर उस की दीवार, उ़स्मान उस की छत और अ़ली उस का दरवाज़ा हैं।" (مسند الفردوس، 1/43، حدیث: 105)

सुन्नतों का मैं चर्चा करूं रात दिन हो अ़त़ा ऐसा जज़्बा पए चार यार

(वसाइले बख़्शिश, स. 225)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते बीबी फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا की शान

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "फ़ात़िमा" मेरा टुकड़ा है, जिस ने इसे नाराज़ किया उस ने मुझे नाराज़ किया। (بخاری، 2/550، حدیث: 3767)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** इस (यानी मेरी बेटी) का नाम "**फ़ातिमा**" इस लिए रखा गया कि अल्लाह पाक ने उस को और उस के मुहिब्बीन (यानी महब्बत करने वालों) को दोज़ख़ से आज़ाद किया है।

(کنزالعمال، 1/50، حدیث:34222)

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** तुम्हारे (यानी हज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا के) ग़ज़ब से ग़ज़बे इलाही होता है, और तुम्हारी रिज़ा से रिज़ाए इलाही।

(مستدرک، 3/192، حدیث:3615)

आप पर अल्लाह की रहमत हो हज़रते फ़ातिमा आप के सदक़े में हो हम पर भी रहमते फ़ातिमा
ज़ाहिरी व बातिनी बीमारियां अ़त्तार की दूर हों, दिलवा दो अपने रब से सेहत फ़ातिमा

ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللهُ عَنْهَا की शान में नारे

दुख़्तरे मुस्तफ़ा, सय्यिदा फ़ातिमा — ज़ौजए मुर्तज़ा, सय्यिदा फ़ातिमा
सालिहा पारसा, सय्यिदा फ़ातिमा — मुत्लक़न बा हया, सय्यिदा फ़ातिमा
सय्यिदा ज़ाहिरा, सय्यिदा फ़ातिमा — तय्यिबा ताहिरा, सय्यिदा फ़ातिमा
आ़बिदा ज़ाहिदा, सय्यिदा फ़ातिमा — साबिरा शाकिरा, सय्यिदा फ़ातिमा
साजिदा साइमा, सय्यिदा फ़ातिमा — आ़रिफ़ा आ़दिला, सय्यिदा फ़ातिमा
आ़लिमा आ़मिला, सय्यिदा फ़ातिमा — आ़क़िला आ़सिमा, सय्यिदा फ़ातिमा
ख़ुल्द में दाख़िला, सय्यिदा फ़ातिमा — दो ख़ुदा से दिला, सय्यिदा फ़ातिमा
हो करम हो अ़ता — सय्यिदा फ़ातिमा

(वसाइले फ़िरदौस, स. 55)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

नवासए रसूल हज़रते इमामे हसन رَضِیَ اللهُ عَنْه की शान

मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बर पर जल्वागर थे और (इमाम)

ह़सन बिन अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا) आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलू (यानी बराबर) में थे। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कभी लोगों की त़रफ़ तवज्जोह करते और कभी (इमाम) ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की त़रफ़ नज़र फ़रमाते। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरा येह बेटा सय्यिद (यानी सरदार) है, अल्लाह पाक इस की बदौलत मुसलमानों की दो बड़ी जमाअ़तों में सुल्ह़ फ़रमाएगा।" (بخاری، 2/214، حدیث:2704)

अल्लाह पाक की आप पर रह़मत हो और आप के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

राकिबे दोशे शहंशाहे उमम या ह़सन इब्ने अ़ली ! कर दो करम !
फ़ात़िमा के लाल ह़ैदर के पिसर ! अपनी उल्फ़त दो मुझे दो अपना ग़म
ऐ शहीदे करबला के भाईजान ! दूर हों अ़त्तार के रंजो अलम

(वसाइले फ़िरदौस, स. 37)

नवासए रसूल

ह़ज़रते इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की शान में नारे

साह़िबुल इत्तिक़ा, हैं ह़सने मुज्तबा सय्यिदुल अस्ख़िया, हैं ह़सने मुज्तबा
नवासए मुस्त़फ़ा, हैं ह़सने मुज्तबा फ़रज़न्दे मुर्त़ज़ा, हैं ह़सने मुज्तबा
नूरे ऐने फ़ात़िमा, हैं ह़सने मुज्तबा दिल बन्दे मुर्त़ज़ा, है ह़सने मुज्तबा
ख़ाइफ़े किब्रिया, हैं ह़सने मुज्तबा सालेह़ व पारसा, हैं ह़सने मुज्तबा
बा ख़ुदा बा सफ़ा, हैं ह़सने मुज्तबा बिल यक़ीं बावफ़ा, हैं ह़सने मुज्तबा
जन्नती बेशुबा, है ह़सने मुज्तबा बा अ़मल बे रिया, हैं ह़सने मुज्तबा
दिलबरो दिल रुबा, हैं ह़सने मुज्तबा रहबरो रहनुमा, हैं ह़सने मुज्तबा
सय्यिदों के पेशवा, हैं ह़सने मुज्तबा हैं शहीदे बावफ़ा, हैं ह़सने मुज्तबा

(वसाइले बख़्शिश, स. 55)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

"हुसैन" के चार हुरूफ़ की निस्बत से इमामे हुसैन के फ़ज़ाइल पर 4 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) मुझ से है और मैं हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) से हूं, अल्लाह पाक उस से महब्बत फ़रमाता है जो हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) से महब्बत करे।

(ترمذی، 5/429، حدیث:3800)

﴿2﴾ हसन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) से जिस ने महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने इन से दुश्मनी की उस ने मुझ से दुश्मनी की।

(مستدرک، 4/156، حدیث:4830)

﴿3﴾ हसन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) दुनिया में मेरे दो फूल हैं। (بخاری، 2/547، حدیث:3753)

﴿4﴾ हसन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) जन्नती जवानों के सरदार हैं।

(ترمذی، 5/426، حدیث:3793)

रुख़्सार से अन्वार का इज़्हार

हज़रते अल्लामा जामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हज़रते इमामे आली मक़ाम सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शान येह थी कि जब अन्धेरे में तशरीफ़ फ़रमा होते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की मुबारक पेशानी और दोनों मुक़द्दस रुख़्सार (यानी गाल) से अन्वार निकलते और क़ुर्बो जवार ज़ियाबार (यानी अतराफ़ रौशन) हो जाते।

(شواہد النبوہ، ص228)

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 246)

कुंएं का पानी उबल पड़ा

हज़रते सय्यिदुना इमामे आली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जब मदीनए मुनव्वरा से मक्कए मुकर्रमा की तरफ़ रवाना हुए तो रास्ते में हज़रते सय्यिदुना इब्ने

मुतीअ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मुलाक़ात हुई। उन्हों ने अ़र्ज़ की : मेरे कुंएं में पानी बहुत कम है, बराहे करम ! दुआए बरकत से नवाज़ दीजिए। आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने उस कुंएं का पानी त़लब फ़रमाया। जब पानी का डोल ह़ाज़िर किया गया तो आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने मुंह लगा कर उस में से पानी नोश किया (यानी पिया) और कुल्ली की। फिर डोल को वापस कुंएं में डाल दिया तो कुंएं का पानी काफ़ी बढ़ भी गया और पहले से ज़ियादा मीठा और लज़ीज़ भी हो गया। (طبقاتِ ابنِ سعد، 5/110 مُلَخَّصاً)

बाग़ जन्नत के हैं बहरे मद्ह ख़्वाने अहले बैत तुम को मुज़्दा नार का ऐ दुश्मनाने अहले बैत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

सोने के सिक्कों की थैलियां

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه की ख़िदमत में एक शख़्स ने अपनी तंगदस्ती (यानी ग़ुर्बत) की शिकायत की। आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : थोड़ी देर बैठ जाओ ! अभी कुछ ही देर गुज़री थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللهُ عَنْه की त़रफ से एक एक हज़ार दीनार (यानी सोने के सिक्कों) की पांच थैलियां आप رَضِیَ اللهُ عَنْه की बारगाह में पेश की गईं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه ने वोह सारी रक़म उस ग़रीब आदमी के ह़वाले कर दी और इस करम नवाज़ी के बावुजूद ताख़ीर पर माज़रत फ़रमाई। (कश्फ़ुल महबूब, स. 77 मुलख़्ख़सन)

या शहीदे करबला फ़रियाद है नूरे चश्मे फ़ातिमा फ़रियाद है
है मेरी ह़ाजत मैं त़ैबा में मरूं ऐ मेरे ह़ाजत रवा फ़रियाद है

"बुख़ारी शरीफ़" में ह़दीसे पाक है कि ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه ने ह़ज़रते इमाम ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه के बारे में फ़रमाया कि येह सब से ज़ियादा रसूलुल्लाह

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुशाबेह (यानी सूरत शरीफ़ में मिलते जुलते) थे । (بخاری، 2/547، حدیث:3752) मगर येह बात ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ह़ज़रत इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शहादत के बाद फ़रमाई है । मत़लब येह है कि दोनों शहज़ादे बनिस्बत दूसरे अफ़राद के अपने जद्दे करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सब से ज़ियादा मुशाबेह थे और उन दोनों में ह़ज़रते इमाम ह़सने मुज्तबा बनिस्बत इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के ज़ियादा मुशाबेह थे, जब उन का विसाल हो गया तो ह़ज़रते इमामे हुसैन मुत्लक़न सब से ज़ियादा मुशाबेह थे । (नुज़हतुल क़ारी, 4/628, तह़तल ह़दीस : 1976) इमाम तिरमिज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, फ़रमाया : ह़सन सर से सीने तक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुशाबेह हैं और हुसैन उस के नीचे पांव तक। (ترمذی، 5/430، حدیث:3804)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

शहज़ादए इमामे अ़ाली मक़ाम ह़ज़रते अ़ली अकबर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

(नवासए रसूल, इमामे अ़ाली मक़ाम ह़ज़रत) इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के तीन बेटों के नाम "अ़ली" थे । अ़ली अकबर, अ़ली औसत़, अ़ली असग़र । अ़ली औसत़ इमाम ज़ैनुल अ़ाबिदीन (رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) हैं, अ़ली अकबर और अ़ली असग़र (رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمَا) करबला में शहीद हुए । (मिरआतुल मनाजीह़, 8/27) ह़ज़रते अ़ली अकबर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ मैदाने करबला में 18 साल की उ़म्र में शहीद हुए । (طبقات ابن سعد، 5/163، قول:755) ह़ज़रते इमाम अ़ली अकबर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ हम शक्ले मुस्त़फ़ा थे ।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हम शक्ल चन्द ह़ज़रात

दोनों साह़िबज़ादगान (यानी ﴿1﴾ इमाम ह़सने मुज्तबा और ﴿2﴾ इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) के इ़लावा और बाज़ ह़ज़रात भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के

हम शक्ल थे : ﴾3﴿ जाफ़र बिन अबी तालिब और उन के साहिबज़ादे ﴾4﴿ अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र, ﴾5﴿ क़ुसम बिन अ़ब्बास, ﴾6﴿ अबू सुफ़्यान बिन हारिस बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब, ﴾7﴿ मुस्लिम बिन अ़क़ील बिन अबी तालिब, ﴾8﴿ (ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई के जद्दे आला) साइब, ﴾9﴿ अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर बिन कुरैज़, ﴾10﴿ काबिस बिन रबीआ़ बिन अ़दी, ﴾11﴿ मुस्लिम बिन मुअ़त्तिब बिन अबी लहब, ﴾12﴿ अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस बिन नौफ़ल बिन हारिस बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब, ﴾13﴿ अ़ली इब्ने अ़ली बिन अन्निजाद बिन रिफ़ाअ़ह, ﴾14﴿ इब्राहीम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ह़सन बिन ह़सन बिन अ़ली, ﴾15﴿ यह़या बिन क़ासिम बिन जाफ़र बिन मुह़म्मद बिन अ़ली बिन हुसैन बिन अ़ली, ﴾16﴿ अ़ब्दुल्लाह बिन अबी तल्हा ख़ौलानी। इन के इ़लावा ﴾17﴿ ह़ज़रते इमाम महदी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ भी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुशाबेह होंगे। इस के इ़लावा ﴾18﴿ ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا भी अपने वालिदे मुकर्रम हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुशाबेह थीं। उन में ग्यारह अफ़राद बनी हाशिम से हैं, कुल अठ्ठारह अफ़राद हुए।

(नुज़हतुल क़ारी, 4/628, ह़दीस : 1974,3753: تحت الحدیث، 83/8، فتح الباری)

अल्लाह पाक की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उस अ़ली अकबर का सदक़ा जो कि हैं   हम शबीहे मुस्तफ़ा फ़रियाद है
या शहीदे करबला फ़रियाद है   नूरे चश्मे फ़ातिमा फ़रियाद है

(वसाइले बख़्शिश, स. 596)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

शहज़ादए इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते अ़ली औसत़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

(नवासए रसूल, इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते) इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के दूसरे शहज़ादे का नाम "अ़ली औसत़" है। अल मारूफ़ इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन

(رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ)। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ मैदाने करबला में शहीद नहीं हुए आप इस मौक़ा पर बीमार थे और वाक़िए करबला के बाद कई साल ह़यात (यानी ज़िन्दा) रहे। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ताबेई़ बुज़ुर्ग हैं, आप ने कई सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से अह़ादीस रिवायत की हैं।

अल्लाह पाक की आप पर रह़मत हो और आप के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

इल्मे ह़क़ दे बाक़िरे इल्मे हुदा के वासिते सय्यिदे सज्जाद के सदक़े में साजिद रख मुझे

(शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिया, स. 68)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

शहज़ादए इमामे अ़ली मक़ाम ह़ज़रते अ़ली असग़र رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ

(नवासए रसूल, इमामे अ़ली मक़ाम ह़ज़रते) इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के तीसरे शहज़ादे का नाम "अ़ली असग़र (رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ)" है। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ मैदाने करबला में अपने बाबाजान इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के साथ तशरीफ़ लाए, जब अहले बैते अत़्हार के नौजवानाने जां निसार एक एक कर के इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ पर अपनी जानें क़ुरबान कर गए तो इमामे मज़्लूम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ तन्हा रह गए, ख़ैमे में तशरीफ़ ला कर अपने छोटे साह़िबज़ादे (जो अ़वाम में अ़ली असग़र मश्हूर हैं) मैदान में लाए, एक शक़ी (यानी बदबख़्त) ने तीर मारा कि गोद ही में ज़ब्ह़ हो गए, इमाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उन का ख़ून ज़मीन पर गिराया और दुआ़ की : "इलाही ! अगर तू ने आस्मानी मदद हम से रोक ली है तो अन्जाम बख़ैर फ़रमा और उन ज़ालिमों से बदला ले। (الکامل فی التاریخ، 3/429, आइनए क़ियामत, स. 72)

अल्लाह पाक की इमाम अ़ली असग़र رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ पर रह़मत हो और आप के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।" اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

दे अ़ली असग़र का सदक़ा सरवरा पैकरे जूदो सख़ा फ़रियाद है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

ज़ौजए इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते बीबी शहर बानो رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا

नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल, इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम ह़ज़रते इमाम ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه की एक ज़ौजए मोह़तरमा का नाम मुबारक "शहरबानो" है। आप ईरान की शहज़ादी थीं। (मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा) ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللهُ عَنْه) ने इमामे ह़ुसैन (رَضِیَ اللهُ عَنْه) से आप का निकाह़ कर दिया।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8/102 ब तग़य्युर)

शहरबानो के नाम की वजहे तस्मिया

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ عَنْه जब अपने शहज़ादे इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه के निकाह़ शरीफ़ के बाद उन दोनों के पास मुबारकबाद देने के लिए तशरीफ़ लाए और पूछा : उन का नाम क्या है ? अ़र्ज़ किया : "कैहान बानो" फ़रमाया : "इस का क्या मत़लब है ?" अ़र्ज़ किया : "سَیِّدَۃُ الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃ यानी दुनिया व आख़िरत की सरदार।" आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "سَیِّدَۃُ الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ فَاطِمَۃُ بِنْتُ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" यानी दुनिया व आख़िरत की सरदार तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बेटी फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا हैं।" फिर उन का नाम तब्दील कर के سَیِّدَۃُ الْبَلَدَۃِ यानी "शहरबानो" रख दिया और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا इसी नाम से मश्हूर हो गईं। ह़ज़रते बीबी शहरबानो (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا) ही से इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) पैदा हुए। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا की क़ब्रे मुबारक तेहरान (ईरान) में है। (मिरआतुल मनाजीह़, 5/505)

अल्लाह पाक की आप पर रहमत हो और आप के सदक़े हमारी बेहिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

हज़रते बीबी सकीना رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا

(शहज़ादिए इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنۡہ)

(नवासए रसूल, इमामे आ़ली मक़ाम हज़रते) इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنۡہ की एक साहिबज़ादी का नाम "सकीना" رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہَا है। अपने बाबाजान इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنۡہ के साथ करबला में सात साल की उ़म्र में तशरीफ़ लाई थीं। आप رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہَا वाक़िए करबला के बाद अ़र्से तक हयात (यानी ज़िन्दा) रहीं।

अल्लाह पाक की आप पर रहमत हो और आप के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

मरहबा ज़हरा बतूल ऐ फ़ातिमा बिन्ते रसूल
दो जहां में सुर्ख़ रू है तेरी इतरत फ़ातिमा

ख़ाइफ़ीने किब्रिया अस्हाबो अहले बैत हैं — आ़शिक़ाने मुस्तफ़ा अस्हाबो अहले बैत हैं
सालिहीनो अत्क़िया अस्हाबो अहले बैत हैं — आ़बिदीनो पारसा अस्हाबो अहले बैत हैं
दीन पर दिल से फ़िदा अस्हाबो अहले बैत हैं — सब यक़ीनन बावफ़ा अस्हाबो अहले बैत हैं
मोमिनों के रहनुमा अस्हाबो अहले बैत हैं — आ़सियों का आसरा अस्हाबो अहले बैत हैं
फ़ज़्ले मौला से सदा अस्हाबो अहले बैत हैं — आसरा अ़त्तार का अस्हाबो अहले बैत हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025